मुसीबत

म.क.रैना

मेरी सांस अब रुक रुक कर चलने लगी। चेहरा पीला पड गया और टांगों ने चलने से साफ इनकार कर दिया। हिम्मत करके मैंने दायें बायें नज़र दौडाई लेकिन आदमी के नाम पर कोई दिखाई न दिया। आसमान पर घने बादल थे और हवा ज़ोर ज़ोर से चल रही थी। चांद कभी बादलों की ओट से निकल आता और कभी छिप जाता। साफ साफ कुछ भी न दिखाई दे रहा था। मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उस पहलवान को देख रहा था जो रात के एक बजे सड़क किनारे बरगद के नीचे उट्ठक बैठक कर रहा था। दूर से उस का चेहरा तो नहीं दिखाई दे रहा था लेकिन उस का कद और उट्ठक बैठक का अंदाज़ बहुत डरावना था। मैं ने मन ही मन हनुमान चालीसा पढ़ना शुरू किया और साथ ही साथ उस घडी को कोसने लगा जब मैं ने केशव चाचा का काम करने के लिये हाँ कर दी थी। केशव चाचा की नज़रों में भले ही मेरी इज्ज़त बढ़ गई हो लेकिन अब मैं अपने साथ साथ उनको भी कोस रहा था।

केशव चाचा रिश्ते में मेरे चाचा तो नहीं थे लेकिन उन की आयु और गांव के बच्चों के साथ उनका प्यार देख कर हम सब उन्हें चाचा कह कर ही पुकारते थे। वे कोई दो वर्ष से गाँव में नहीं रह रहे थे। उनका बेटा जो अब डाक्टर बन चुका था, पालम शहर में नौकरी करता था और वहीं पर उस ने अपना बंगला भी बनाया था। केशव चाचा की पत्नी कुछ समय से बीमार चल रही थी इसलिये वे भी गांव छोड कर बेटे के साथ ही रहने लगे थे।

आठ दिन पहले केशव चाचा अपनी खेती देखने गाँव आये थे। उन का यहाँ रहने का कार्यक्रम लम्बा था लेकिन अचानक बेटे की तरफ से संदेश मिला कि वह तुरन्त पालम लौट आयें। पालम शहर गाँव से कोई सौ मील दूर था। जाने के लिये रेल गाडी थी लेकिन उसका टिकट लेने के लिये कौसल जाना पडता था जो गाँव से आठ मील दूर था। केशव चाचा ने दूसरे दिन ही शाम की गाडी से पालम

जाने का फैसला किया। गाँव में सारा काम तुरन्त निपटाने की वजह से वे स्वयं कौसल जाने के लिये समय नहीं जुटा पा रहे थे इसलिये उन्होंने गाँव के लडकों से बात की। इस से पहले कि कोई दूसरा तैयार हो जाये, मैं ने उन की गाडी की टिकट लाकर देने के लिये हाँ कर दी। केशव चाचा ने मेरे सर पर प्यार से हाथ फेरा और आशीर्वाद दिया। मैं खुशी से फुले न समाया। वास्तव में मुझे पालम शहर देखने का बडा शौक था। केशव चाचा का काम करके मैं उनका स्नेह पाना चाहता था ताकि वह कभी मुझे अपने यहां बुलायें और शहर दिखायें।

शाम के पांच बज रहे थे। कौसल तक सरकारी बस जाती थी और वहाँ पहुँचने में कोई एक घंटा लगता था। टिकट खरीद कर वापस आने में देर हो सकती थी। कौसल से आखिरी बस आठ बजे रात निकलती थी पर वह गाँव तक नहीं आती थी। गाँव तक पहुँचने के लिये दो मील का फासला पैदल ही तय करना पडता था। यह रास्ता रात में सुनसान रहता था। लोगों ने अंधेरा होने के बाद इस रास्ते सफर करने वालों के बारे में तरह तरह की कहानियाँ सुनी थी। किसी ने अपने सामने आदमी को गायब होते देखा था तो किसी ने औरत की चीख पुकार सुनी थी। किसी को छोटे बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो किसी ने बीच सडक आग पैदा होते देखी थी। गरज़ जितने मुँह उतनी बातें। लेकिन यह सब केवल कहानियाँ थीं। कोई गाँव वाला सामने आकर यह नहीं बोल रहा था कि ऐसा मैंने देखा है। फिर भी लोगों के मन में खौफ था और यही वजह थी कि अकसर लोग आखिरी बस पकडने से गुरेज़ करते थे। हाँ, बस में गाँव लौटने वाले दो चार आदमी हों तो साथ में चल कर गाँव तक आना मुश्किल नहीं था। हाँ, मन में भय ज़रूर रहता था।

टिकट का पैसा देने के लिये केशव चाचा ने मुझे अपने घर आने को कहा। मैं नहीं गया। मेरी जेब में कालेज की फीस भरने के लिये पैसे मौजूद थे। मैं ने कहा टिकट खरीद कर बाद में पैसे ले लूंगा। मैं जाने लगा तो चाचा ने कहा, ''आने में देर हो जाये तो बनसी के हाँ ठहर जाना। रात को मत आना। सुनसान रास्ता है, बादल भी हैं। अकेले हुए तो अंधेरे में डर लगेगा।'' चाचा के कहे बिना भी मैं रात को कौसल में ही ठहरने वाला था लेकिन अपनी धौंस जमाने के लिये मैं ने कह दिया, ''नहीं चाचा जी। मैं तो रात को ही वापस आऊंगा। मैं डरपोक थोडे ही हूं। मैं तो कितनी बार रात को अकेले घर वापस आया हूं। डर नाम की कोई चीज़ तो मैं जानता ही नहीं।'' केशव चाचा यह सुन कर बहुत खुश हुए और 'जुग जुग जियो' कह कर चल दिये।

रेल की टिकट खरीद कर मैं बनसी के घर की तरफ चल पडा। बनसी हमारे गाँव का ही रहने वाला था। रेलवे स्टेशन से थोडी ही दूर उसकी कपडे की दुकान थी और दुकान के साथ ही उसने रहने के लिये एक दो कमरे भी बना लिये थे। पंद्रह बीस दिन में वह एक बार गाँव आ जाता और अपनी खेती देख लिया करता।

पर मेरी क़िस्मत खराब थी। बनसी घर पर नहीं था। दुकान भी बंद थी। पता चला कि वह माल खरीदने दूसरे शहर गया हुआ है। आखिरी बस निकलने में केवल पंद्रह मिनट रह गये थे और बस अड्डे पहुँचने के लिये मुझे एक मील का रास्ता तय करना था। मैं ने बस अड्डे की तरफ दौडना शुरू किया। दौड़ते दौड़ते मेरा बुरा हाल हुआ। बस अड्डे पहुँचते पहुँचते मैं हाँफने लगा। वह तो किस्मत अच्छी थी कि समय पर वहाँ पहुँच गया। मैं सीट पर बैठ गया और बस निकल पडी। मेरी सांस अब भी फूल रही थी। कडंक्टर को बस का किराया देने के बाद मैं सीट पर ही सो गया।

अचानक मेरी नींद खुल गई। बस का कंडक्टर मुझे झँझोड़ रहा था। मेरे बस से उतरने का समय आ गया था। मेरे उतरते ही बस निकल पडी। मैं अकेला था। गाँव का कोई भी आदमी आज बस में नहीं था। रात बहुत हो चुकी थी। अकेले आगे जाने में डर लग रहा था। डर को भगाने के लिये मैं अपनी कुल देवी को याद करने लगा। मेरे आगे कोई था न पीछे। हिम्मत जुटाकर मैं चल पडा। हवा ज़ोर से चल रही थी। पेड़ पत्ते हिल रहे थे। चारों तरफ से अजीब अजीब आवाजें आ रही थीं। जैसे तैसे मैंने बीस पच्चीस कदम ही आगे बढ़ाये थे कि दूर वह पहलवान दिखाई दिया।

मेरी हिम्मत टूट गई। चांद पूरी तरह बादलों के पीछे छिप गया और घुप्प अंधेरा छा गया। पहलवान और ज़ोर ज़ोर से उठक बैठक करने लगा। वह वाकई पहलवान था या कोई भूत, मेरी समझ में नहीं आ रहा था। उसने टांगों पर सफेद कपडा लपेट कर रखा था और बाज़ू इतने लम्बे थे कि बरगद की टहनियों को छू रहे थे। हाँ, वह सचमुच कोई भूत ही था। मुझे लगा कि उस ने मुझे आते हुये देख लिया। मुझे डराने के लिये वह ज़ोर ज़ोर से बरगद के पेड को हिलाने लगा। मैंने पीछे की तरफ देखा लेकिन भागने का कोई रास्ता नहीं था। उस तरफ भी घुप्प अंधेरा था और तरह तरह की आावाज़ें वहां से भी आ रही थीं। अचानक बारिश शुरू हो गई। मुझे मेरे बचने की कोई उम्मीद न रही। मैंने सोचा, मरना तो है ही, क्यों न हिम्मत करके भूत से भिड़ ही जाऊं।

सड़क के दोनों किनारों पर पेड़ और झाडियाँ थीं। मैंने सड़क के बीचों-बीच चलना शुरू किया ताकि झाडियों के अंदर छिपा कोई भूत-प्रेत मुझे हाथ बढ़ा कर पकड़ न ले। मेरे चलने के साथ ही बारिश और पेड़ पत्तों की आवाज़ों के साथ दो ओर आवाज़ें जुड़ गईं। एक आवाज़ बहुत धीमी थी लेकिन दूसरी ऐसी जैसे कोई पत्थर की स्लेट पर लोहे की छडी से वार कर रहा हो। यह आवाज़ें कहाँ से आ रही थीं, यह देखने के लिये मैं रुक गया। मेरे रुकते ही आवाज़ बंद हो गईं। मैं फिर चलने लगा तो आवाज़ें फिर सुनाई दीं। अब तो डर ने मुझे और भी दबोच लिया। बारिश और ज़ोर से होने लगी। छिपने का कोई ठिकाना न था। आसमान में बिजली चमकी और बादल ज़ोर से गरजने लगे। मैं ने फिर हनुमान चालीसा पढ़ा और भूत से दो दो हाथ करने को तैयार हो गया।

भूत को ऐसा न लगे कि मैं घबराया हुआ हूँ, यह सोच कर मैने अपने आप को सम्भाला। अपने अंदर हिम्मत पैदा की और फौज के सिपाही की तरह दनदनाता हुआ आगे बढ़ा। भूत अब करीब होता जा रहा था। मैंने हिम्मत न हारी। मैं भूत के पास पहुँचा ही था कि बिजली फिर चमकी। सारा इलाका रोशन हो गया। सामने जो दृष्य था वह देख कर पहले तो मैं स्तब्ध रह गया फिर मेरी हंसी छूट गई। सामने कोई भूत नहीं था। सफेद रंग का मील का पत्थर मुझे चिढ़ा रहा था। पत्थर के ऊपर बरगद के पेड की दो टहनियां झुक गई थीं जो हवा चलने की वजह से ज़ोर जोर से हिल रही थीं। मील का सफेद पत्थर दूर से भूत दिखाई दे रहा था और बरगद की टहनियां और पत्ते भूत के बाज़ू लग रहे थे। मैं मील के पत्थर पर थोडी देर सुसताने के लिये बैठ गया। बारिश थम चुकी थी और चांद निकल आया था। मैंने पाँव सहलाने के लिये जूते खोले। क्या देखा कि एक जूते के तलवे में एक मेख अटक गई है। यह मेख शायद बस अड्डे में ही मेरे जूते में अटक गई थी और इसी की वजह से सड़क पर चलने से डरावनी आवाज़ आ रही थी। दूसरी धीमी आवाज तो साफ़ साफ़ दूसरे जूते की थी जो मैं डर की वजह से समझ न पाया था। बाकी रास्ता मैने बिना किसी डर के तय किया। केशव चाचा टिकट पाकर बहुत खुश होंगे और इनाम भी देंगे, यह सोच कर मैं घर पर चैन की नींद सो गया।

दूसरे दिन सुबह जब मैं केशव चाचा के घर की तरफ जा रहा था तो मेरे कई मित्र रास्ते में मिल गये। जब उन को पता चला कि मैं रात को ही वापस आया हूँ तो वह सहम गये। इस से पहले कि वह मुझ से कुछ पूछते, मैंने कह दिया, ‘‘मैं तुम लोगों की तरह डरपोक नहीं हूं। किसी भूत वूत से नहीं डरता। मैं आधी रात को भी शमशान के रास्ते निकल सकता हूँ।’’

केशव चाचा के घर पहुंचा तो उन का माली बगीचे में मिला। पता चला कि केशव चाचा नहीं हैं। उन का डाक्टर बेटा रात को ही अपनी गाडी लेकर आया था और चाचा उसी के साथ चले गये। यह सुन कर मैं सकते में आ गया। मैं कितनी मुसीबतें झेल कर आया था, यह सुने बिना ही केशव चाचा निकल गये थे। फिर केशव चाचा की टिकट, जिस का पैसा मैंने अपनी जेब से दिया था! वह पैसा अब कौन देगा? मेरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया। मैंने जेब से टिकट निकाली और माली के हाथ में यह कह कर थमा दी कि केशव चाचा से मेरे पैसे ले लेना। माली ने टिकट उठा कर फेंक दी और मेरी परवाह न करते हुये अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर दिया। मेरी आँखों में आँसू आ गये। ‘‘केशव चाचा ऐसा मेरे साथ क्योंकर कर सकते हैं?’’ मैं बहुत देर बुत बन कर खडा रहा। टिकट गंदगी के ढ़ेर पर पडी हुई थी और केशव चाचा का माली अधखुली खिडकी से मुँह उठाये मुझे इस तरह देख रहा था मानो मुझे तुरन्त वहाँ से चले जाने को कह रहा हो। ❄❄❄